अलका सरावगी और उनकी विकलांग चेतना

डॉ० मीनू देवी
ग्राम-माजरी, पो०-पिरान कलियर, रूडकी (हरिद्वार)
उत्तराखण्ड, पिन-२४७६६७

आधुनिक साहित्य में अलका सरावगी सफल कलाकार के रूप में विख्यात हैं। इनका जन्म १९६० में कोलकाता में हुआ था । बीस वर्ष की आयु में इनका विवाह महेश सरावगी के साथ सम्पन्न हुआ । इनकी दो संताने हैं । रघुवीर सहाय के काव्य में इन्होंने कोलकाता विश्विद्यालय से पी-एच०डी० की । अलका सरावगी ने छः उपन्यास और लघु कहानियों के दो संग्रह लिखे इन्होंने अपने पहले उपन्यास कलि-कथाः वाया बाईपास के माध्यम से कोलकाता के मारवाडी जीवन पर प्रकाश डाला है। 'कलि -कथाः वाया बाइपास' उपन्यास के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है । इनका दूसरा उपन्यास 'शेष कादम्बरी' समाज में फैली स्त्री विषयक विडम्बनाओं पर आधारित है, तीसरा उपन्यास 'कोई बात नहीं' एक सत्रह साल के लडके की कथा कहता है, जो बोलने व चलने में अक्षम है, इस समस्या के होने के बाद भी उसमें जीवन को जीने की जिज्ञासा है, यह उपन्यास एक मंत्र है हार न मानने वालों की नई शुरूवातों के नाम , जिसमें एक माँ और अक्षम बेटे के पारस्परिक प्रेम को दर्शाया गया है । आधुनिक जीवन में जब प्रतियोगिता जीवन परम मूल्य है और सारे निर्णय ताकत ओर समार्थ्य के हाथ में हैं ऐसे समाज में शशांक 'कोई बात नहीं' उपन्यास का मुख्य पात्र अपने आपको अकेला महसूस करता है। वह सोचता है कि इस 'नार्मल' समाज में उसका कोई अस्तित्व नहीं है, वह मन ही मन में कहता है -

तूमसे नाराज नहीं जिन्दगी हैरान हूँ .....

विद्वनों ने विकलांग शब्द को सही अर्थ में स्पष्ट किया है, इस शब्द को लेकर कई भ्रम पैदा होते हैं । इस समाज में अनेक प्रकार के व्यक्ति देखने को मिलते हैं जैसे किसी व्यक्ति की लाचार अवस्था को देखकर कोई उसे 'बेचारा' शब्द से सम्बोधित करता है तो वह शब्द भावनात्मक भी होता है और व्यंग्यपूर्ण भी । शारीरिक विकलांगता हो या मानसिक विकलांगता इसकी पुष्टि चिकित्सक के द्वारा की जाती है । प्राकृति द्वारा जन्म से या जन्म के बाद दी गई शारीरिक व मानसिक दुर्बलता को विकलांगता कहा जाता है । विकलांगता को विद्वनों ने कई प्रकारों से परिभाषित किया है, जैसे- प्राकृतिक तथा गर्भदोष के कारण, अज्ञानता के कारण , हीनभावना के कारण, मानसिक रूप से विकलांग, श्रवण विकलांग, कुपोषण और शारीरिक विकलांगता आदि ।

अलका सरावगी ने 'कहानी की तलाश में' कहानी संग्रह की 'आपकी हँसी' कहानी में एक ऐसे आर्धविकसित व्यक्ति के चरित्र को उखेरा है जो मानसिक रूप से अक्षम है और इस अक्षमता को वह अपनी हँसी में छिपा लेता है, परन्तु हमारा समाज उसे 'नार्मल' व्यक्ति नहीं मानता , उसे एक पागल की श्रेणी में ही रखता है।

तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो
क्या गम है जिसको छिपा रहे हो ।

इस कहानी में लेखिका ने मानसिक रूप से विकलांग व्यक्ति के उपेक्षापूर्ण सामाजिक जीवन पर अपनी दृष्टि डाली है वह उस व्यक्ति की मानसिक विकलांगता की अनकही पीड़ा को अपने कहानी संग्रह में अभिव्यक्त करती हैं । जिसे समाज ने उपेक्षित कर दिया है । दाम्पत्य जीवन में मिले धोखे के कारण ही वह बेबात ही हँसता रहता है । क्योंकि वह व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों से अलग है, आदमी और आदमी की असमानताओं पर आधारित यह कहानी ऐसे व्यक्ति से संम्बन्ध रखती है, जिसने जीवन मे बहुत सी कठिनाइयों को झेला है परन्तु वह अपनी हँसी में सब छिपा लेता है । यह समाज उसे 'अबनार्मल' की श्रेणी में रखता है ''अच्छा भला आप ही बताइए बिना पागल हुए कोई इतना हँस सकता है ।''१ जिस व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं है । यह कहानी उस अस्तित्वहीन व्यक्ति की

अस्पष्ट पीड़ा के प्रति उस व्यक्ति को जानने की जिज्ञासा है, जो उसके जीवन के बारे में सोचने के लिए विवश करती है। वह व्यक्ति खुशमिजाज आदमी है जो अपने रिश्तेदार के यहाँ रहता है वह उस घर का नौकर तो नहीं है किन्तु घर का हर तरह का काम करने के लिए नत्थू बाबू और उसकी बीवी उसे आदेश देते हैं। लेखिका आगे लिखती हैं कि ''अब मेरे लिए यह जाने बगैर रहना मुश्किल हो गया था कि यह आदमी कौन है। यह क्यों इस घर के सदस्य की तरह रहते हुए भी उन लोगों के लिए जैसे कोई है ही नहीं। इसका अपना घर परिवार कहाँ है? पर मुझे समझ नहीं आता कि किससे पूछूँ और कैसे पूछूँ।''२ मानसिक रूप से विकलांग ऐसे व्यक्ति की पीड़ा इस समाज में पग-पग पर देखने को मिलती है। हर रोज किसी कहानी के माध्यम से यह हमारे सामने आती है आपकी हँसी से अभिप्राय है समाज की हँसी जो मंदबुद्धि और मानसिक विकलांग व्यक्तियों पर इस समाज में समय-असमय होती रहती है ।

इसी प्रकार अलका सरावगी द्वारा लिखित 'कोई बात नहीं' उपन्यास शारीरिक रूप से विकलांग अक्षम एक सत्रह साल के लडके और उसकी माँ के द्वारा उसके लिए किये गये संघर्ष की कथा कहता है । उपन्यास का मुख्य पात्र शशांक नामक सत्रह साल का लडका है जो शारीरिक रूप से सामन्य बच्चों कि तरह 'नार्मल' नहीं है। ''पैदा होते समय गले में लिपटी कार्ड या नली, डाक्टर ने माँ का सिजेरियन ऑपरेशन करने में लापरवाही से देर करने के कारण उसके दिमाग में हुई ऑक्सीजन की कमी, पहले तीन महीनों में कई बार हुई ऐंठन, देर से गर्दन संभालना , देर से बैठने खड़े होना-यानी 'माइल्सस्टोन्स डिलेड' आदि आदि''३ शारीरिक समस्याओं का सामना करना पडा। शशांक का शरीर सामान्य बच्चों की तरह नहीं, पर उसका दिमाग पूरी तरह विकसित और कुशाग्र है, वह स्कूल भी जाता है, लेकिन बुखार के एक वायरस से वह शारीरिक रूप से अशक्त और उसकी बोली अवरूद्ध हो जाती है। उसके परिवार के सदस्य सोचते हैं कि ''शशांक का भविष्य क्या है? सेंट जोसेफ जैसे नामी स्कूल और कॉलेज में पढ भी लेगा, पर उसकी कोई गारंटी नहीं है कि रोजगार के बाजार में उसकी वैसी पूछ होगी, जैसे- अच्छे - खासे चलने और बोलने वाले लडकों की।''४ उसकी जिन्दगी बचपन के कई साल पीछे से प्रारम्भ हुई क्योंकि उसके शरीर में बहुत सी कमियां थी। शशांक पार्क में हमेशा घुमने के लिए जाता है। तभी उसे एक दिन जतिन दा नामक व्यक्ति मिलता है और वह उसका दोस्त बन जाता है,वह उसे अच्छी अच्छी कहानियां सुनाता है। शशांक का स्कूल में आर्थर एकमात्र दोस्त है क्योंकि शशांक शारिरिक रूप से विकलांग है, फिर भी वह सेंट जोसेफ स्कूल में पढ़ने जाता है। स्कूल में सब बच्चे शशांक पर हँसते हैं, वह अपनी माँ को बताना चाहता है कि आर्थर ही उसका दोस्त है पर उसकी माँ आर्थर को मंदबुद्धि समझती है और उसको पसंद नहीं करती। एक दिन शशांक को अपनी माँ पर खीज आ जाती है वह माँ से कहता है ''तुम्हारी समझ में कभी आएगा भी नहीं। तुम्हें क्या मालूम है ? हाँ? ही-ट्रीटस-मी-एज-इक्वल।''५ शशांक को स्कूल में सब लोग तंग करते हैं केवल आर्थर ही उसे समझता है लेकिन जब से शशांक की माँ ने स्कूल की प्रधानाध्यापक मिस्टर जोसेफ को पत्र लिखा तब से उसे कोई तंग नहीं करता, फिर भी उसकी माँ का मन नहीं मानता तब वह बेटे से बार-बार पूछती है, शशांक कहता है ''कोई बात नहीं डियर मॉम । नो प्रॉब्लम । तुम किसी को चिटठी लिखो और फिर वह साला न सुधरे, ऐसा कभी हो सकता है।''६

शशांक की माँ उसे ठीक करने के लिए दिन रात संघर्ष करती रहती है। उसकी माँ उसके मन में कभी अपाहित होने कि भावना पैदा नहीं होने देती, इसलिए वह बचपन से ही उसका होमियोपैथीक डाक्टर से ही इलाज कराती आयी है। शशांक स्वंय बताता है कि ''ऐसा कभी नहीं हुआ कि माँ बचपन में उसे साथ लेकर आधा किलोमीटर चली हो और कम से कम दो सलाह देने वाले न मिले हों कि झाड-फूंक-देवता-थान-मन्नत से लेकर होमियोपैथी-आयुर्वेद-मालिश-नैचुरोपैथी तक किस तरीके से उसका सही इलाज हो सकता है''७ शशांक की माँ वकील है फिर भी वह अपने बेटे के लिए वो सब करती है जिसे वो नहीं करना चाहती। माँ के इन प्रयासों से शशांक मे बहुत बदलाव आता है। वह अच्छी तरह बोलने व लिखने लगा है। इतना ही नहीं, वह स्कूल में नीना आंटी को कविता पढ़कर सुनाता है ,फिर एक दिन अचानक उसकी तबीयत बिगड़ जाती है। उसे बुखार के कारण अस्पताल में

भर्ती किया जाता है, फिर से उसका चलना बोलना बंद हो जाता है। उसकी माँ डाक्टरों पर अस्पताल में चिल्लाती है, ''क्या इलाज किया आप लोगों ने इसका ? क्या इसलिए इसे अस्पताल लाए थे ? इसकी बोली बंद हो गयी, यह चल नहीं सकता और आप कहते है कि ब्रेन में कुछ नहीं हुआ? तो क्या हुआ इसे?''८ छः दिन बाद उसकी माँ उसका डिस्चार्ज सर्टीफिकेट लिखवाकर उसे घर ले आती है और उसकी माँ होमियोपैथिक के साथ-साथ स्पीच थैरेपिस्ट को भी शशांक को बोलने सिखवाने बुलाती है। सत्रह साल की उम्र में उसकी पहली हँसी उसकी माँ को आनंदित करती है। ये पहले-पहल की सारी बातें उसकी माँ डायरी में नोट करती है, उसके ठीक होने के बाद उसकी माँ को सारी बातें अच्छी लगती है । उसका पहला झगडा, पहला प्रतिवाद, उसकी दया जिस प्रकार छोटे बच्चे की पहली हर बात अच्छी लगती हैं, उसके पापा उससे कहते है कि ''तुम मेरी जान हो ।यू आर माई लाइफ।''९ शशांक के मम्मी और पापा दोनों का एकमात्र यही लक्ष्य है ।शशांक की माँ उसे स्कूल भेजती है ।उसके लिए व्हीलचेयर खरीदती है और अपने बेटे शशांक से कहती है कि ''दुनिया की किसी माँ ने आज तक अपने बेटे के लिए इतनी खुशी-खुशी व्हील-चेयर नहीं खरीदी होगी। आई एम रियेली प्राउड आफॅ यू।''१० उसकी माँ उसके स्कूल के लिए एक टाइपराइटर और एक वर्ड-बोर्ड लेकर देती है । शशांक अपनी माँ और पापा की कठिनाइयों को समझता है । उसकी दादी कहती है कि तुम ठीक होने लगे हो यह तुम्हारे माँ-बाप की तपस्या है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखिका समाज को नया ज्ञान देती है कि परिस्थितियां चाहे कुछ भी रही हो शारीरिक , मानसिक , मंदबुद्धि विकलांगता वाले व्यक्तियों को भावात्मक परिपक्वता देना आवश्यक है । अलका सरावगी अपने कथा-साहित्य में विकलांग चरित्रों को केन्द्र में रखते हुए उन्हें भावात्मक परिपक्वता और विश्वास दिलाने का प्रयास किया है कि वह भी इस समाज का हिस्सा हैं और उन्हें भी उतने ही अधिकर हैं जितने एक 'नार्मल' व्यक्ति के होते हैं । विकलांगों की वेदना और दुःख को देखकर आम व्यक्ति के भावों को उजागर करना ही लेखिका की विकलांग चेतना है ।

संदर्भ

१. आपकी हँसी, कहानी, अलका सरावगी , पृष्ठ १३२
२. आपकी हँसी, कहानी, अलका सरावगी , पृष्ठ १३०
३. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ ११५
४. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ २६
५. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ २६
६. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ ११६
७. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ ६५
८. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ १२२
९. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ २१६
१०. कोई बात नहीं, उपन्यास, अलका सरावगी , पृष्ठ १५४